ICSSR Sponsored

ISSN: 2319-9997

Journal of Nehru Gram Bharati University, 2024; Vol. 13 (2):124-130

प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छालाओं के समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन

मुकेश कुमार सिंह एवं संजीव कुमार
शिक्षाशास्त्र विभाग,
नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उ.प्र.

Received: 23.07.2024 Revised: 27.09.2024 Accepted: 18.10.2024

सारांशः

प्रत्तुत अध्ययन प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करता है इस अध्ययन के उद्देश्य में छात्र और छात्राओं के समायोजन क्षमता के साथ–साथ सामाजिक, आर्थिक, संवेगात्मक एवं शैक्षिक समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन हुआ है प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या के रूप में प्रयागराज जनपद में स्थिति प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र एवं छातायें को जनसंख्या माना गया है। अतः अध्ययनकर्त्ता ने जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करने वाले न्यादर्श के रूप में प्रयागराज जनपद में स्थित प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् 150 विद्यार्थियों (75 बालक एवं 75 बालिकाएँ) का यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया है। डॉ० ए०के० पी० सिंह और आर०पी० सिंह के समायोजन सूची का प्रयोग किया गया है। इनके सूची में संवेगात्मक, सामाजिक एवं शैक्षिक क्षेत्रों का पद तय किया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया है। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षो छात्र एवं छाताओं के सम्पूर्ण समायोजन, सामाजिक समायोजन एवं शैक्षिक समायोजन में समानता पायी गयी जबकि संवेगात्मक समायोजन छात्रों में छात्राओं की अपेक्षा अधिक पायी गयी। अर्थात् छात्रों द्वारा बाह्य वातावरण में अधिक रहना तथा विभित्र संवेगों वाले लोगों से मिलना–जुलना आदि उनके संवेगात्मक संमायोजन में परिवक्वता लाना हो सकता है।

सरकारी एवं गैर–सकारी संस्थाओं द्वारा छात्राओं को जो सुविधाएँ प्राप्त हो रही है जिससे उनके समान एवं परिवार का स्तर ऊँचा हुआ है।

मुख्य शब्द – प्राथमिक स्तर, छात्र एवं छात्राएँ सायोजन क्षमता, तुलनात्मक अध्ययन।

प्रस्तावना

समायोजन एक ऐसी क्षमता है जो व्यक्ति को उसके परिवेश अत्यन्त प्रतिस्पर्धा एवं संघर्ष से परिपूर्ण है ऐसी परिस्थितियों में व्यक्ति जब अपने आपको परिवेश से समायोजित नहीं कर पाता तो लक्ष्य को पाना मुशकिल हो जाता है। किसी भी विद्यार्थियों को अपने भावी जीवन में अपने निर्धारित लक्ष्य पर पहुंचना है

तो अपने व्यक्तिगत जीवन, सामाजिक जीवन तथा व्यावसायिक जीवन में समायोजन करना परम आवश्यक है यदि वह पूर्ण रस से समायोजित है तो वह सदैव अपने प्रगति के मार्ग पर आगे की ओर अग्रसर रहेगा।

व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु तक समायोजन सम्बन्धी समस्याओं से जुझता एवं उनका समाधान निकालता रहता है आज वैज्ञानिक युग में यह समायोजन सम्बन्धी प्रत्यय उग्र रूप से प्रकट हो रहा है। वर्तमान समाज ने तनाव जटिलताओं, प्रतिद्धन्तिाओं आदि में वृद्धि होने के कारण व्यक्ति स्वयं को असुक्षित अनुभव करता है इसका परिणाम यह होता है कि व्यक्ति वातावरण में समायोजन नहीं कर पाता एवं उसका व्यक्तित्व असंतुष्टि हो जाता है। आज के परिवर्तनशील समाज में समायोजन की समस्या से सबसे अधिक किशोर बालक बालिकायें प्रभावित हो रहे है अर्थात् किशोरावस्था में छात्र एवं छालाएँ में द्रुत गति से अनेक प्रकार के परिवर्तन होते है जो कि उनके जीवन में उतार चढाव लाते ळें समायोजन शब्द अंग्रेजी के एडजस्टमेन्ट शब्द का ही पर्यायवाची है इसकी व्युत्पत्ति जीव जीव विज्ञान के एडाप्सन शब्द से हुई है जिसका तात्पर्य है अपनें आप को परिस्थितियों के अनुसार ढालना।
जेम्स सी० कोलमैन के अनुसार– समंजन, अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने तथा खिचावों से निपटने के लिए व्यक्ति द्वारा किये गये प्रयासों का परिणाम है।

गेट्स जेसिल्ड एवं अन्य– समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई जीवधारी अपनी आवश्यकताओं तथा इन आवश्यकताओं की संतुष्टि से सम्बन्धित परिस्थितियों में संतुलन बनाये रखता है।

आइजेनिक के अनुसार– समायोजन वह अवस्था है जिसमें एक ओर व्यक्ति की आवश्यकता तथा दूसरी ओर पर्यावरण सम्बन्धी विपदाओं की पूर्ण संतुष्टि होती है अथवा यह वह प्रक्रिया है जिसमें इन दोनों के मध्य सामंजस्य स्थापित हो जाता है।

इन परिभाषाओं के विश्लेषित करके देखा जाए तो शेफर के द्वारा दी गयी पहली परिभाषा समायोजन की मूलभूत आवश्यकताओ की पूर्ति के संदर्भ में परिभाषित करने का प्रत्यक्ष करती है इसके अनुसार कोई बालक या व्यक्ति तभी तक समायोजित अनुभव करता है जब तक उसकी आवश्यकताओं और इन इस आवश्यकताओं की पूर्ति से जुड़ी हुई उसकी कोशिशें तथा परिस्थितियों के बीच संतुलन बना रहे। जैसे ही वह संतुलन गड़बडाता है अर्थात् व्यक्ति को उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति में बांधा पहुँचती है उसका कुसमायोजन प्रारम्भ हो जाता है।

समायोजित व्यक्ति के लक्षण :–

समायोजन की क्षमता से युक्त व्यक्ति या भली–भाँति स्लायोजित

व्यक्ति यक्तित्व एवं व्यवहार में निम्न विशेषताएँ पायी जाती है।

1. परिस्थिति का ज्ञानए नियंतण तथा अनुकूल आचरण
2. सन्तुलन
3. पर्यावरण तथा परिस्थिति से लाभ उठाना।
4. समाज के अन्य व्यक्तियों का ध्यान
5. संन्तुष्टि एवं सुख
6. सामाजिक, आदर्श चरित, संवेगात्मक रूप से स्थिर, संतुलित तथा दायित्वपूर्ण।
7. साहसी एवं समस्या का समाधान युक्त।

मनोवैज्ञानिक प्रयोगों द्वारा इस निष्कर्ष पर पहुँच है कि मनुष्य के व्यक्तिव्य का निर्माण उसके शिशु काल में सर्वेधिक होता है। उसे जो कुछ बनना होता है उसका वह 3/4 शिशुकाल में बन जाता है बालक पारिवारिक वातावरण के साथ–साथ विद्यालयी वातावरण में भी प्रभावित होता है। और बालकों की निष्पत्ति के साथ–साथ उनके समायोजन क्षमता पर पड़ता है। यादव, अजीत कुमार (2013) ने अपने शोध अध्ययन में पाया कि उच्च माध्यमिक स्तर के सह शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत् किशोर एवं किशोरियों के समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर है किशोर चाहे वह सह शिक्षण का हो या एकल शिक्षण संस्थान का उसके समायोजन में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अनिता (2014) ने निष्कर्ष में पाया गया कि प्राथमिक छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में के बीच अन्तर विद्यमान है अर्थात प्राथमिक, लड़कियों का समायोजन प्राथमिक लड़कों की अपेक्षा अधिक है ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में निवास करने वाले प्राथमिक विद्यार्थियो के समायोजन के बीच महत्वपूर्ण अन्तर पाया गया अर्थात शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों में समायोजन अधिक पायी गयी ।

अतः कहा जा सकता है कि वर्तमान में पढ़ने वाले छात एवं छात्राओं के समायोजन में अन्तर पाया जाना स्वाभाविक है। जहाँ छात्राओं को पढ़ने के लिए लोगों उनको जागरूक कर रहे है वहीं कुछ कारक ऐसे है जहाँ छात्र एवं छात्राओं दोनों को प्रभावित करते हैा अतः अध्ययनकर्ता वर्तमान परिदृश्य को देखते हुए इस विषय चयन कर छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में अन्तर को देखने का प्रयास किया है।

समस्या कथन–

"प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन"

अध्ययन का उद्देश्य–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है।

1. प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन

क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है।

1. प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के समायोजन क्षमता में अन्तर नहीं है।
2. प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन क्षमता में अन्तर नहीं है।
3. प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक, समायोजन क्षमता में अन्तर नहीं है।
4. प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक समायोजन क्षमता में अन्तर नहीं है।

शोध प्रविधिः

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या के रूप में प्रयागराज जनपद में स्थिति माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को जनसंख्या माना गया है। अतः अध्ययनकर्त्ता ने जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करने वाले न्यादर्श का चयन किया है न्यादर्श के रूप में प्रयागराज जनपद में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् 150 विद्यार्थियों (75 छात्र एवं 75 छात्राओं) का यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया हैा समायोजन से सम्बन्धित आँकडे एकत्रित करने हेतु डॉ0 ए0के0पी0 सिंह और डॉ0 आर0पी0 सिंह के समायोजन सूची का प्रयोग किया गया है। इस परिसूची में समायोजन के तीनो क्षेत्रों संवेगात्मक, सामाजिक व शैक्षिक को क्रमशः 20–20 पद निर्धारित किये गये है। ऑकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया है।

आँकडों का विश्लेषण एवं व्याख्याः–

1. प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. H1 प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के समायोजन क्षमता में अन्तर है।
3. H01 प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के समायोजन क्षमता में अन्तर नहीं है।

तालिका सं०–1 : प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के समायोजन क्षमता का मध्यमान, मानक, विचलन एवं टी–अनुपात का मान

प्रतिदर्श	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D)	मध्यमानों का अन्तर	मानक त्रुटि	टी-मान	सार्थकता स्तर	सारिणी मान
छात्र	75	33.88	7.01	1.61	1.14	1.41	0.05	1.98
छात्राएं	75	32.27	6.91					

तालिका सं० में प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के समायोजन क्षमता का मध्यमान क्रमशः 33.88 व 32.27 एवं मानक विचलन क्रमशः 7.01 एवं 6.91 है तथा मानक त्रुटि 1.14 है। 198 पर .05 सार्थकता पर 1.98 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

अतः निष्कर्ष कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के समायोजन क्षमता में अन्तर नही है अर्थात् प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के समायोजन क्षमता पायी गयी।

आँकडों का विश्लेषण एवं व्याख्याः–

2. प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

H1 प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन क्षमता में अन्तर है।

H01 प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन क्षमता में अन्तर नहीं है।

तालिका सं०–2 : प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन क्षमता का मध्यमान, मानक, विचलन एवं टी–अनुपात का मान

प्रतिदर्श	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D)	मध्यमानों का अन्तर	मानक त्रुटि	टी-मान	सार्थकता स्तर	सारिणी मान
छात्र	75	11.88	3.70	1.71	0.62	2.75	0.05	1.98
छात्राएं	75	10.17	3.95					

तालिका सं० 2 में प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन क्षमता का मध्यमान क्रमशः 11.88 व 10.17 एवं मानक विचलन क्रमशः 3. 70 एवं 3.95 है तथा मानक त्रुटि 0.62 है। दोनो मध्यमानों के अन्तर का टी–अनुपात 2.75 है जो कि 198 पर .05 सार्थकता स्तर पर 1.98 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन क्षमता में अनतर है अर्थात् प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रमें संवेगात्मक समायोजन क्षमता छात्राओं की अपेक्षा अधिक पायी गयी।

3. प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

H3 प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन क्षमता में अन्तर है।

H03 प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन क्षमता में अन्तर नहीं है।

तालिका सं०–3 : प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक

समायोजन क्षमता का मध्यमान, मानक, विचलन एवं टी–अनुपात का मान

प्रतिदर्श	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D)	मध्यमानों का अन्तर	मानक त्रुटि	टी-मान	सार्थकता स्तर	सारिणी मान
छात्र	75	10.93	3.31	0.73	0.63	1.16	0.05	1.98
छात्राएं	75	11.66	4.35					

तालिका सं० 3 में प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन क्षमता का मध्यमान क्रमशः 10.93 व 11.66 एवं मानक विचलन क्रमश 3. 31 एवं 4.35 है तथा मानक त्रुटि 0.63 है। दोनों मध्यमानों के अन्तर का टी–अनुपात 1.16 है जो कि 198 पर 0.5 सार्थकता स्तर पर 1.98 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है। कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन क्षमता में अन्तर नही है अर्थात सामाजिक समायोजन क्षमता पायी गयी।

प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक समायोजन क्षमता तुलनात्मक अध्ययन करना।

H4 प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक समायोजन क्षमता में अन्तर है।

H04 प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक समायोजन क्षमता में अन्तर नहीं है।

तालिका सं0–04 प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक समायोजन क्षमता का मध्यमान क्रमशः 11.०7 व 10.44 एवं मानक विचलन क्रमशः 3. 78 एवं 3.59 है तथा मानक त्रुटि 0.60 है। दोनो मध्यमानों के अन्तर का टी–अनुपात 1.05 है जो कि 198 पर .05 सार्थकतास्तर पर 1.98 से कम है अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं से समान शैक्षिक समायोजन क्षमता में अन्तर नहीं है अर्थात् माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं से समान शैक्षिक समायोजन क्षमता पायी गयी।

निष्कर्ष : प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये।

- प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं से समान समायोजन क्षमता में अन्तर नहीं है अर्थात् दोनों में समान समायोजन क्षमता है।
- प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन क्षमता में अन्तर है अर्थात् प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र में संवेगात्मक समायोजन क्षमता छात्राओं की अपेक्षा उच्च है।
- प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन क्षमता में अन्तर नहीं है अर्थात् दोनों में समान सामाजिक समायोजन क्षमता है।
- प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक समायोजन क्षमता में

अन्तर नहीं है अर्थात् दोनों में समान शैक्षिक समायोजन क्षमता है।

सुझाव :

अध्ययन में प्रापत निष्कर्षो के आधार पर कहा जा सकताहै कि छात्र एवं छात्राओं के सम्पूर्ण समायोजन, सामाजिक समायोजन एवं शैक्षिक समायोजन में समानता पायी गयी जबकि संवेगात्मक समायोजन छात्रों की अपेक्षा अधिक पायी गयी। इसका कारण यह हो सकता है कि छात्रों द्वारा बाह्य वातावरण में अधिक रहना तथा विभिन्न समायोजन में परिपक्वता लाना हो सकता है। वर्तमान में छात्राओं को शिक्षा के प्रति आगे बढ़ाने में सरकारी आयोगों के साथ–साथ सरकार एवं गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा समाज एवं परिवार में भी लोग जागरूक हुए है जिसके कारण छात्राओं में सामाजिक एवं शैक्षिक समायोजन छात्रों के बराबर पायी गयी।

संन्दर्भ :

शाकीन, अंजली एण्ड मोहन्ती, एस०के (2008), "ए स्टडी ऑफ एडजस्टमेंट ऑफ एडोलसेंट ब्यावज एण्ड गर्ल्स ऑफ बर्किंग एण्ड नॉन वर्किंग मदर्स", इन्टीप्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, नजफगढ़, नई दिल्ली।

इदौरिया गिरिजा (2014) शेखावटी क्षेत्र की कस्तुरबा गॉधी आवासीय विद्यालयों की बालिकाओं के आत्मविश्वास, समायोजन एवं मानवीय मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन, शोध–प्रबन्ध श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबडेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझनु राजस्थान।

अनित (2014) कार्यकारी व ग्रहिणी महिलाओं के बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि व समायोजन पर परिवार की प्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन, शोध–प्रबन्ध शिक्षाशास्त्र, श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबडेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझनु राजस्थान।

सिंह संजीव (2008)2 स्तर पर छात्रों की बुद्धि एवं समायोजन पर परिवारिक सम्बन्धों के प्रभाव का अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, छत्रपतिशाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर।

- www.shodhganga.org
- www.iosrjournals.org
- www.injet.upm.edu.my
- www.iistc.org

Disclaimer/Publisher's Note:

The statements, opinions and data contained in all publications are solely those of the individual author(s) and contributor(s) and not of JNGBU and/or the editor(s). JNGBU and/or the editor(s) disclaim responsibility for any injury to people or property resulting from any ideas, methods, instructions or products referred to in the content.